

# ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 1, Issue- 2, October-December 2025  
Email id: editor@researchprojournal.com

ISSN (O)- 3107-9679  
Website- www.researchprojournal.com



## आस्था, उम्र और मानसिक जड़ता: विश्वास—स्थायित्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

डॉ. संजय कुमार

सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर, एल.एन.एम.यू. दरभंगा

सार—

मानसिक जड़ता (Cognitive Rigidity) और विश्वास—स्थायित्व (Belief Perseverance) मानव चिंतन के ऐसे पक्ष हैं, जो व्यक्ति की आयु, मस्तिष्कीय विकास, सामाजिक अनुभव तथा सांस्कृतिक परिवेश से गहराई से जुड़े होते हैं। यह लेख विभिन्न आयु—समूहों में मानसिक जड़ता के विकासात्मक क्रम का विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि व्यक्ति विरोधाभासी तथ्यों के बावजूद अपने विश्वासों को क्यों बनाए रखता है। यह अध्ययन तंत्रिका—विज्ञान, विकासात्मक मनोविज्ञान, सामाजिक मनोविज्ञान तथा संज्ञानात्मक विज्ञान के शोध निष्कर्षों पर आधारित एक समग्र समीक्षा है। उपलब्ध शोधों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानसिक लचीलापन तीसरे दशक (20—30 वर्ष) से धीरे—धीरे घटने लगता है, 50—60 वर्ष के बीच इसमें तीव्रता आती है और 60 वर्ष के बाद यह अधिक स्पष्ट रूप ले लेता है।

हालाँकि यह प्रक्रिया पूर्णतः जैविक नहीं है। मानसिक सक्रियता, शारीरिक व्यायाम, सामाजिक सहभागिता तथा आजीवन सीखने की प्रवृत्ति जैसे कारक मानसिक जड़ता की तीव्रता को काफी हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। लेख यह प्रतिपादित करता है कि मानसिक जड़ता कोई अपरिवर्तनीय नियति नहीं, बल्कि जीवन—शैली और मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपों द्वारा प्रभावित की जा सकने वाली प्रक्रिया है।

**मुख्य शब्द—** मानसिक जड़ता, विश्वास—स्थायित्व, प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स, पुष्टिकरण पक्षपात, वृद्धावस्था।

### 1. भूमिका—

मानसिक जड़ता से तात्पर्य उस अवस्था से है, जिसमें व्यक्ति नई परिस्थितियों, नए तथ्यों अथवा वैकल्पिक दृष्टिकोणों के अनुसार अपने विचारों और व्यवहार में परिवर्तन करने में कठिनाई अनुभव करता है। यह अवस्था मानसिक लचीलेपन (Cognitive Flexibility) के विपरीत होती है, जो कार्यकारी संज्ञानात्मक क्षमताओं (Executive Functions) का एक महत्वपूर्ण घटक है। व्यवहारिक जीवन में मानसिक जड़ता प्रायः धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा वैचारिक विश्वासों के कठोर पालन के रूप में दिखाई देती है (Lord et al., 1979 (Kaplan et al., 2016)। व्यक्ति अपने पूर्व—निर्मित विश्वासों को बनाए रखने के लिए विरोधी प्रमाणों को अस्वीकार कर देता है या उनकी नई व्याख्या कर लेता है। यह प्रवृत्ति केवल वृद्धावस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के विभिन्न चरणों में अलग—अलग रूपों में प्रकट होती है।

सामान्य धारणा यह है कि विचारों में कठोरता केवल बढ़ती उम्र का परिणाम होती है। किंतु आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं तंत्रिका—विज्ञान संबंधी शोध इस धारणा को अत्यधिक सरल मानते हैं। वास्तव में मानसिक जड़ता एक विकासात्मक निरंतरता का परिणाम है, जो बचपन से प्रारंभ होकर वयस्कता और वृद्धावस्था तक विभिन्न रूपों में विकसित होती है (Hedden & Gabrieli, 2004 (Park & Reuter&Lorenz, 2009)।

इस लेख में निम्नलिखित प्रश्नों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है—

- विभिन्न आयु-समूहों में मानसिक जड़ता का विकास किस प्रकार होता है?
- इसके पीछे कौन-से मस्तिष्कीय और मनोवैज्ञानिक तंत्र कार्य करते हैं?
- व्यक्ति स्पष्ट विरोधी प्रमाणों के बावजूद अपने विश्वासों को बनाए क्यों रखता है?

इन प्रश्नों के माध्यम से यह लेख मानसिक जड़ता और विश्वास-स्थायित्व को एक बहु-आयामी मनोवैज्ञानिक परिघटना के रूप में समझने का प्रयास करता है।

## 2. आयु-आधारित विकासात्मक क्रम (बचपन से वृद्धावस्था तक मानसिक जड़ता का विकास)-

मानसिक जड़ता कोई अचानक उत्पन्न होने वाली अवस्था नहीं है, बल्कि यह जीवन के विभिन्न चरणों में क्रमिक रूप से विकसित होने वाली एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। प्रत्येक आयु-चरण में इसके स्वरूप, कारण और प्रभाव भिन्न होते हैं।

### 2.1 बचपन और किशोरावस्था (0-18 वर्ष)

बचपन में मस्तिष्क का प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स- जो योजना, आत्म-नियंत्रण और मानसिक लचीलापन नियंत्रित करता है- पूर्णतः विकसित नहीं होता। इस कारण छोटे बच्चे अक्सर नियमों में बदलाव या नए तरीकों को अपनाने में कठिनाई अनुभव करते हैं। किशोरावस्था में भी मस्तिष्क का यह भाग विकासशील अवस्था में रहता है, जिसके परिणामस्वरूप विचारों में अस्थिरता, कभी-कभी अत्यधिक कठोर राय तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलती हैं (Hedden & Gabrieli, 2004)। हालाँकि, इस आयु की मानसिक जड़ता अस्थायी और विकासात्मक होती है, जिसे अनुभव, शिक्षा और सामाजिक संपर्क के माध्यम से सुधारा जा सकता है।

### 2.2 प्रारंभिक वयस्कता (18-30 वर्ष)

यह चरण व्यक्ति के जीवन में पहचान निर्माण का समय होता है। इसी अवधि में व्यक्ति अपने राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक और सामाजिक विश्वासों को आकार देता है (Lord et al., 1979)। अनुसंधान यह संकेत देते हैं कि लगभग 20-30 वर्ष की आयु से मानसिक लचीलेपन में सूक्ष्म गिरावट प्रारंभ हो सकती है, यद्यपि यह दैनिक जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती। इस अवस्था में व्यक्ति अपने विचारों को "स्थिर सत्य" मानने लगता है, जो आगे चलकर परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध का आधार बन सकते हैं।

### 2.3 मध्य वयस्कता (30-50 वर्ष)

इस आयु-काल में व्यक्ति अनुभव, विशेषज्ञता और सामाजिक भूमिकाओं में स्थिरता प्राप्त करता है। व्यावहारिक समस्याओं के समाधान में यह अनुभव सहायक होता है, किंतु इसके साथ-साथ कार्यात्मक जड़ता (Functional Fixedness) भी बढ़ने लगती है। इस चरण में व्यक्ति ने अपने विश्वासों में समय, भावनाएँ और सामाजिक प्रतिष्ठा निवेश कर दी होती है। ऐसे में विचार बदलना केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक जोखिम भी बन जाता है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति अपने दृष्टिकोण को बनाए रखने के लिए तर्कों का चयनात्मक उपयोग करने लगता है (Kunda, 1990)।

### 2.4 उत्तर-मध्य वयस्कता (50-60 वर्ष)

यह मानसिक जड़ता के विकास का एक महत्वपूर्ण संक्रमणकाल माना जाता है। इस अवस्था में मस्तिष्क के प्रीफ्रंटल क्षेत्रों में संरचनात्मक परिवर्तन अधिक स्पष्ट होने लगते हैं। स्मृति, ध्यान और संज्ञानात्मक लचीलेपन में धीरे-धीरे गिरावट देखी जाती है। इस आयु में व्यक्ति जीवन के अनेक निर्णयों को "अंतिम" मानने लगता है, जिससे नए विचारों को अपनाने की संभावना कम हो जाती है। यहाँ मानसिक जड़ता अब केवल मनोवैज्ञानिक नहीं, बल्कि जैविक आधार भी ग्रहण करने लगती है। (Park-Reuter&Lorenz, 2009 (Hedden & Gabrieli, 2004))

### 2.5 वृद्धावस्था (60 वर्ष के बाद)

60 वर्ष के बाद मानसिक जड़ता सर्वाधिक स्पष्ट और मापनीय रूप में दिखाई देती है। इस अवस्था में व्यक्ति अक्सर अपने पूर्व-स्थापित विश्वासों को चुनौती के रूप में नहीं, बल्कि खतरे के रूप में अनुभव करता है। हालाँकि, यह उल्लेखनीय तथ्य है कि सभी वृद्ध व्यक्ति समान रूप से मानसिक जड़ता का अनुभव नहीं करते। जिन व्यक्तियों में आजीवन सीखने की प्रवृत्ति, सामाजिक सक्रियता और मानसिक अभ्यास बना रहता है, उनमें मानसिक लचीलापन अपेक्षाकृत सुरक्षित रहता है। (Park & Reuter-Lorenz, 2009 (Hedden & Gabrieli, 2004))

## 2.6 आयु—आधारित सारांश

अनुसंधानों के आधार पर मानसिक जड़ता का आयु—क्रम इस प्रकार समझा जा सकता हैरू

20—30 वर्ष: सूक्ष्म और लगभग अदृश्य आरंभ

30—40 वर्ष: धीमी वृद्धि, अनुभव से मिश्रित

40—50 वर्ष: मध्यम स्तर की वृद्धि, आत्म—औचित्य के साथ

50—60 वर्ष: तीव्र परिवर्तन, जैविक प्रभाव स्पष्ट

60+ वर्ष: सर्वाधिक स्पष्ट, किंतु व्यक्तिगत भिन्नताओं के साथ

## 3. मानसिक जड़ता के तंत्रिका—जैविक आधार (मस्तिष्क, न्यूरोट्रांसमीटर और विश्वास)—

मानसिक जड़ता केवल एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि इसके पीछे मस्तिष्क की संरचना, कार्यप्रणाली और रासायनिक तंत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आधुनिक तंत्रिका—विज्ञान के शोध यह स्पष्ट करते हैं कि विचारों में कठोरता मस्तिष्कीय प्रक्रियाओं का प्रत्यक्ष परिणाम होती है।

### 3.1 प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स और कार्यकारी कार्य

प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स मस्तिष्क का वह भाग है जो योजना, निर्णय—निर्माण, आत्म—नियंत्रण तथा मानसिक लचीलेपन को नियंत्रित करता है। विशेष रूप से डॉर्सोलेटरल प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स (DLPFC) नई सूचनाओं के आधार पर सोच में परिवर्तन करने की क्षमता से जुड़ा होता है। तंत्रिका—इमेजिंग अध्ययनों से ज्ञात होता है कि जब व्यक्ति वैकल्पिक समाधान अपनाता है या अपने दृष्टिकोण में बदलाव करता है, तब इस क्षेत्र की सक्रियता बढ़ जाती है। बढ़ती आयु के साथ इस क्षेत्र में संरचनात्मक क्षरण, सिनेप्स की संख्या में कमी तथा तंत्रिका—संयोजन की दक्षता में गिरावट आती है, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक लचीलापन घटता है (Hedden & Gabrieli, 2004 (Park & Reuter-Lorenz, 2009)।

### 3.2 न्यूरोट्रांसमीटर तंत्र की भूमिका

#### (क) डोपामिन तंत्र

डोपामिन मानसिक लचीलापन, प्रेरणा और सीखने से जुड़ा प्रमुख न्यूरोट्रांसमीटर है। डोपामिन की संतुलित मात्रा नई सूचनाओं को स्वीकार करने और पुराने विचारों को संशोधित करने में सहायक होती है। उम्र बढ़ने के साथ डोपामिन रिसेप्टरों की संख्या और सक्रियता में कमी आती है, जिससे व्यक्ति नवीन अनुभवों की अपेक्षा परिचित विचारों को प्राथमिकता देने लगता है।

#### (ख) सेरोटोनिन तंत्र

सेरोटोनिन भावनात्मक नियंत्रण और व्यवहारिक लचीलेपन से जुड़ा होता है। इसके स्तर में गिरावट आने पर व्यक्ति में आवेगशीलता, जिद और दोहरावपूर्ण सोच बढ़ सकती है। अनुसंधानों में पाया गया है कि सेरोटोनिन असंतुलन वाले व्यक्तियों में विश्वास—स्थायित्व अधिक प्रबल होता है।

### 3.3 पुरस्कार तंत्र और विश्वासों का सुदृढीकरण

हाल के तंत्रिका—विज्ञान शोधों ने एक रोचक तथ्य उजागर किया है— जब व्यक्ति ऐसी सूचना से सामना करता है जो उसके पूर्व—स्थापित विश्वासों के अनुरूप होती है, तब मस्तिष्क के पुरस्कार केंद्र (जैसे वेंड्रल स्ट्रायटम) सक्रिय हो जाते हैं। यह प्रक्रिया व्यक्ति को मानसिक सुख प्रदान करती है, जिससे वह उन्हीं सूचनाओं को बार—बार स्वीकार करना चाहता है। इसके विपरीत, जब कोई सूचना व्यक्ति के विश्वासों को चुनौती देती है, तब मस्तिष्क का एमिगडाला सक्रिय हो जाता है, जो भय और खतरे की अनुभूति से जुड़ा होता है। इस अवस्था में तर्कसंगत विश्लेषण की बजाय भावनात्मक प्रतिक्रिया हावी हो जाती है।

### 3.4 विश्वासों की रक्षारू तर्क बनाम भावना

जब किसी व्यक्ति के विश्वासों पर प्रश्न उठता है, तब मस्तिष्क की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है— विश्वास की रक्षा। इस प्रक्रिया में प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स की सक्रियता कम हो जाती है, जबकि भावनात्मक केंद्र अधिक सक्रिय हो जाते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति तथ्यों की वस्तुनिष्ठ समीक्षा करने के बजाय, अपने दृष्टिकोण को सही ठहराने के लिए तर्क खोजने लगता है। यह तंत्रिका—जैविक प्रक्रिया यह स्पष्ट करती है कि विश्वास बदलना केवल बौद्धिक चुनौती नहीं, बल्कि मस्तिष्कीय स्तर पर भी एक कठिन कार्य है।

#### 4. संज्ञानात्मक और मनोवैज्ञानिक तंत्र (पुष्टिकरण पक्षपात, प्रेरित तर्क और विश्वास-स्थायित्व)–

मानसिक जड़ता केवल मस्तिष्कीय संरचना का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे कुछ विशिष्ट संज्ञानात्मक और मनोवैज्ञानिक तंत्र कार्य करते हैं, जो व्यक्ति को अपने विश्वासों से चिपके रहने के लिए प्रेरित करते हैं।

##### 4.1 पुष्टिकरण पक्षपात–

पुष्टिकरण पक्षपात मानव संज्ञान की एक मौलिक प्रवृत्ति है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति उन्हीं सूचनाओं को खोजता, स्वीकार करता और याद रखता है, जो उसके पूर्व-निर्मित विश्वासों के अनुरूप होती हैं। विरोधाभासी तथ्यों को या तो अनदेखा कर दिया जाता है, या उन्हें अविश्वसनीय ठहराया जाता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप व्यक्ति स्वयं को यह विश्वास दिला लेता है कि उसके विचार "तथ्यों पर आधारित" हैं, जबकि वास्तविकता में वह तथ्यों का चयनात्मक उपयोग कर रहा होता है। यह पक्षपात सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विश्वासों में विशेष रूप से प्रबल रूप में देखा जाता है।

##### 4.2 प्रेरित तर्क–

प्रेरित तर्क की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति पहले अपने वांछित निष्कर्ष का चयन करता है और फिर उस निष्कर्ष को सही सिद्ध करने के लिए तर्कों की खोज करता है (Kunda, 1990)। इस प्रक्रिया में व्यक्ति को यह भ्रम बना रहता है कि वह निष्पक्ष और तार्किक चिंतन कर रहा है। प्रेरित तर्क का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह व्यक्ति की आत्म-छवि और पहचान की रक्षा करता है। अपने विश्वासों को बदलना कई बार स्वयं को "गलत" स्वीकार करने के समान अनुभव होता है, जिससे व्यक्ति बचना चाहता है।

##### 4.3 विश्वास स्थायित्व–

विश्वास-स्थायित्व वह प्रवृत्ति है, जिसमें व्यक्ति यह जान लेने के बाद भी कि उसके विश्वास का आधार गलत था, उस विश्वास को बनाए रखता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि व्यक्ति समय के साथ अपने विश्वास के समर्थन में अनेक सहायक तर्क विकसित कर लेता है, जो मूल प्रमाण के हट जाने के बाद भी विश्वास को जीवित रखते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि विश्वास केवल तथ्यों पर आधारित नहीं होते, बल्कि वे व्यक्तिगत अर्थ और भावनात्मक निवेश से भी निर्मित होते हैं। (Lord et al., 1979)

##### 4.4 बैकफायर प्रभाव–

कुछ परिस्थितियों में जब व्यक्ति को उसके गलत विश्वासों के विरुद्ध ठोस प्रमाण प्रस्तुत किए जाते हैं, तो वह अपने विश्वास को छोड़ने के बजाय और अधिक कठोर हो जाता है। इस प्रवृत्ति को बैकफायर प्रभाव कहा जाता है। यह प्रभाव तब अधिक प्रबल होता है, जब विश्वास व्यक्ति की पहचान, आस्था या समूह-सदस्यता से गहराई से जुड़ा हो। ऐसी स्थिति में तथ्य व्यक्ति को सच्चाई की ओर नहीं, बल्कि आत्म-रक्षा की ओर धकेल देते हैं।

##### 4.5 संज्ञानात्मक असंगति और आत्म-औचित्य

जब किसी व्यक्ति के विश्वास और व्यवहार में विरोधाभास उत्पन्न होता है, तो मानसिक असुविधा उत्पन्न होती है। इस असुविधा को कम करने के लिए व्यक्ति अपने विश्वासों को पुनः तर्कसंगत ठहराने का प्रयास करता है। धीरे-धीरे यह आत्म-औचित्य एक सतत प्रक्रिया बन जाती है, जिसमें व्यक्ति अपने मूल विचार से और अधिक दूर चला जाता है, परंतु उसे छोड़ने में स्वयं को असमर्थ अनुभव करता है।

#### 5. मानसिक जड़ता के सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम (आस्था, समूह पहचान और सामाजिक निवेश)–

मानव विश्वास केवल व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं बनते, बल्कि वे सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में गहराई से निहित होते हैं। मानसिक जड़ता को समझने के लिए सामाजिक संदर्भों की भूमिका को समझना अनिवार्य है।

##### 5.1 समूह पहचान और सामाजिक संबद्धता

व्यक्ति अपनी पहचान का एक महत्वपूर्ण भाग उन सामाजिक समूहों से ग्रहण करता है, जिनसे वह स्वयं को जुड़ा हुआ मानता है—जैसे धर्म, जाति, समुदाय, राजनीतिक विचारधारा या सांस्कृतिक परंपरा। जब किसी विश्वास पर प्रश्न उठता है, तो यह केवल विचारों को नहीं, बल्कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान को भी चुनौती देता है। ऐसी स्थिति में विश्वास बनाए रखना आत्म-संरक्षण का माध्यम बन जाता है। व्यक्ति विरोधी दृष्टिकोण को केवल

असहमति नहीं, बल्कि समूह के विरुद्ध खतरे के रूप में अनुभव करता है।

## 5.2 सामाजिक निवेश और प्रतिबद्धता

किसी विश्वास में जितना अधिक समय, भावना और सामाजिक प्रतिष्ठा निवेश की जाती है, उसे छोड़ना उतना ही कठिन हो जाता है। धार्मिक या वैचारिक विश्वासों में व्यक्ति वर्षों तक अनुष्ठान, त्याग, सार्वजनिक घोषणाएँ और सामाजिक भूमिकाएँ निभाता है। इस दीर्घकालिक निवेश के कारण व्यक्ति अपने विश्वासों को बनाए रखने के लिए निरंतर औचित्य प्रस्तुत करता रहता है। यह प्रक्रिया संकट लागत भ्रांति (Sunk Cost Fallacy) से जुड़ी होती है, जहाँ व्यक्ति पुराने निवेश को व्यर्थ मानने से बचने के लिए नए तर्क गढ़ता रहता है।

## 5.3 अनिश्चितता, भय और कठोर विश्वास

अनिश्चितता की स्थिति में मनुष्य स्वाभाविक रूप से ऐसे विश्वासों की ओर आकर्षित होता है, जो स्पष्टता और सुरक्षा का अनुभव प्रदान करें। आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक परिवर्तन या व्यक्तिगत संकट के समय कठोर और स्पष्ट विचारधाराएँ मानसिक आश्रय का कार्य करती हैं। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति जटिल और बहु-दृष्टिकोणीय चिंतन के बजाय सरल, निश्चित और दो-टूक विश्वासों को अपना पसंद करता है।

## 5.4 आधुनिक सूचना परिवेश और प्रतिध्वनि-कक्ष

डिजिटल युग में सामाजिक मीडिया ने मानसिक जड़ता को और अधिक सुदृढ़ किया है। ऑनलाइन मंच प्रायः उपयोगकर्ताओं को वही सामग्री दिखाते हैं, जो उनके पूर्व-विश्वासों के अनुरूप होती है। इस प्रतिध्वनि-कक्ष (म्बीव बैउडमत) में व्यक्ति को ऐसा अनुभव होता है कि उसके विचार सर्वमान्य और निर्विवाद हैं। विरोधी विचारों की अनुपस्थिति मानसिक जड़ता को और गहरा कर देती है।

## 5.5 भारतीय सामाजिक संदर्भ

भारतीय समाज में आस्था, परंपरा और सामूहिक पहचान का प्रभाव अत्यंत गहरा है। परिवार, समुदाय और धार्मिक संस्थाएँ विश्वासों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करती हैं, जिससे वे भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से अत्यधिक मजबूत हो जाते हैं। इस संदर्भ में मानसिक जड़ता केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिघटना के रूप में सामने आती है।

## 6. अस्तित्ववादी और धार्मिक मनोविज्ञान का दृष्टिकोण (मृत्यु-भय, आस्था और पवित्र मूल्य)–

मानव विश्वास केवल सामाजिक या संज्ञानात्मक संरचनाओं का परिणाम नहीं होते, बल्कि वे जीवन और मृत्यु से जुड़े गहरे अस्तित्वगत प्रश्नों से भी उत्पन्न होते हैं। विशेषकर वृद्धावस्था में आस्था और विश्वासों की कठोरता को इस दृष्टि से समझना आवश्यक है।

### 6.1 मृत्यु-भय और अर्थ की खोज

जैसे-जैसे व्यक्ति की आयु बढ़ती है, मृत्यु का बोध अधिक स्पष्ट और व्यक्तिगत होता जाता है। इस अवस्था में मनुष्य जीवन के अर्थ, अस्तित्व की निरंतरता और मृत्यु के बाद की संभावनाओं पर अधिक चिंतन करने लगता है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के अनुसार धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वास मृत्यु-भय को नियंत्रित करने का एक प्रभावी साधन होते हैं। ये विश्वास व्यक्ति को यह आश्वासन देते हैं कि जीवन केवल भौतिक अस्तित्व तक सीमित नहीं है।

### 6.2 आतंक-प्रबंधन सिद्धांत

आतंक-प्रबंधन सिद्धांत के अनुसार, जब व्यक्ति को अपनी नश्वरता का स्मरण कराया जाता है, तो वह अपने सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वासों की रक्षा अधिक तीव्रता से करता है। ऐसे समय में आस्था व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करती है। वृद्धावस्था में यह प्रक्रिया अधिक प्रबल हो जाती है, क्योंकि मृत्यु-चेतना जीवन का एक प्रत्यक्ष अनुभव बन जाती है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति उन विश्वासों को त्यागने से बचता है, जो उसे अस्तित्वगत आश्रय प्रदान करते हैं।

### 6.3 पवित्र मूल्य और तर्क से परे विश्वास

कुछ विश्वास ऐसे होते हैं, जिन्हें व्यक्ति पवित्र या अस्पर्शनीय मानता है। इन मूल्यों को वह किसी भी भौतिक लाभ या तर्क के बदले त्यागने को तैयार नहीं होता। पवित्र मूल्यों से जुड़े विश्वासों में भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ अत्यधिक तीव्र होती हैं, जबकि तर्कसंगत मूल्यांकन की भूमिका सीमित हो जाती है। यही कारण है कि धार्मिक

या नैतिक मुद्दों पर संवाद अक्सर टकराव का रूप ले लेता है।

#### 6.4 वृद्धावस्था और आस्था का सुदृढीकरण

वृद्धावस्था में सामाजिक भूमिकाओं में कमी, शारीरिक सीमाएँ और भविष्य की अनिश्चितता आस्था को जीवन का केंद्रीय आधार बना देती हैं। ऐसी स्थिति में आस्था केवल विश्वास नहीं, बल्कि जीवन को अर्थ प्रदान करने वाला ढाँचा बन जाती है। इस पृष्ठभूमि में मानसिक जड़ता को केवल संज्ञानात्मक कमजोरी के रूप में देखना अनुचित होगा। यह व्यक्ति के अस्तित्व को स्थिर रखने का एक मनोवैज्ञानिक प्रयास भी हो सकता है।

#### 7. व्यक्तित्व और विकासात्मक कारक (खुलेपन का गुण, अधिनायकवादी प्रवृत्ति और प्रारंभिक समाजीकरण)–

मानसिक जड़ता केवल आयु या सामाजिक परिस्थिति का परिणाम नहीं है। व्यक्ति के व्यक्तित्व गुण और प्रारंभिक विकासात्मक अनुभव भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही कारण है कि समान आयु और समान सामाजिक परिवेश में रहने वाले व्यक्तियों में भी मानसिक लचीलापन अलग-अलग स्तरों पर पाया जाता है।

##### 7.1 अनुभव के प्रति खुलापन

व्यक्तित्व के पाँच-गुण सिद्धांत के अनुसार "अनुभव के प्रति खुलापन" वह गुण है, जो व्यक्ति की नवीन विचारों, वैकल्पिक दृष्टिकोणों और बौद्धिक जिज्ञासा के प्रति प्रवृत्ति को दर्शाता है। जिन व्यक्तियों में यह गुण अधिक होता है, वे–

- नए विचारों को सहजता से स्वीकार करते हैं।
- विरोधी मतों को व्यक्तिगत अपमान नहीं मानते।
- जीवन के उत्तरार्ध में भी सीखने की इच्छा बनाए रखते हैं।

इसके विपरीत, कम खुलेपन वाले व्यक्ति परंपरा, नियम और निश्चितताओं को प्राथमिकता देते हैं, जिससे मानसिक जड़ता की संभावना बढ़ जाती है।

##### 7.2 अधिनायकवादी प्रवृत्ति और कठोर विश्वास

कुछ व्यक्तियों में अधिकार के प्रति अत्यधिक सम्मान, आज्ञाकारिता और नियमों के कठोर पालन की प्रवृत्ति पाई जाती है। ऐसी अधिनायकवादी प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों में धार्मिक और वैचारिक विश्वास अधिक कठोर होते हैं (Altemeyer, 1981)। ये व्यक्ति–

- अस्पष्टता और बहुव्याख्या से असहज महसूस करते हैं।
- स्पष्ट, दो-टूक और संरचित विश्वास प्रणालियों को पसंद करते हैं।
- असहमति को अव्यवस्था या खतरे के रूप में देखते हैं।

यह प्रवृत्ति मानसिक जड़ता को सुदृढ करने का कार्य करती है।

##### 7.3 प्रारंभिक समाजीकरण और विश्वासों की जड़ें

बचपन में सीखे गए विश्वास अत्यंत प्रभावशाली होते हैं, क्योंकि उस समय आलोचनात्मक चिंतन विकसित नहीं हुआ होता। परिवार, विद्यालय और धार्मिक संस्थाएँ उस अवस्था में जो मूल्य प्रदान करती हैं, वे व्यक्ति की मानसिक संरचना में गहराई तक समाहित हो जाते हैं। जब ये विश्वास भावनात्मक सुरक्षा और पारिवारिक प्रेम से जुड़े होते हैं, तब उन्हें छोड़ना आगे चलकर अत्यंत कठिन हो जाता है। इस प्रकार प्रारंभिक समाजीकरण मानसिक जड़ता की नींव रख सकता है।

##### 7.4 विकासात्मक लचीलापन और परिवर्तन की संभावना

हालाँकि प्रारंभिक अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं, फिर भी वे व्यक्ति के भविष्य को पूर्णतः निर्धारित नहीं करते। जीवन में विविध अनुभव, शिक्षा, आत्म-चिंतन और सामाजिक संपर्क व्यक्ति के मानसिक ढाँचे को पुनर्गठित कर सकते हैं। यह तथ्य इस बात को रेखांकित करता है कि मानसिक जड़ता अपरिवर्तनीय नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसे उपयुक्त परिस्थितियों में बदला जा सकता है।

#### 8. चर्चा और निहितार्थ

अब तक प्रस्तुत विश्लेषण यह संकेत देता है कि मानसिक जड़ता और विश्वास-स्थायित्व को किसी एक

कारण या किसी एक स्थापित मॉडल के माध्यम से पूर्णतः नहीं समझा जा सकता। उपलब्ध मनोवैज्ञानिक, तंत्रिका-विज्ञान, सामाजिक तथा अस्तित्ववादी शोधों के समेकन से यह स्पष्ट होता है कि यह एक बहु-आयामी मनोवैज्ञानिक परिघटना है। इस लेख का उद्देश्य किसी नवीन या पृथक मनोवैज्ञानिक मॉडल का प्रस्ताव करना नहीं है। इसके स्थान पर, यह लेख विभिन्न स्थापित सिद्धांतों और शोध निष्कर्षों को एक साथ रखते हुए मानसिक जड़ता को एक समेकित वैचारिक ढाँचे (Integrative Conceptual Framework) के रूप में प्रस्तुत करता है।

### 8.1 मानसिक जड़तारू एक समेकित वैचारिक ढाँचा

उपलब्ध साहित्य के समन्वय से यह स्पष्ट होता है कि मानसिक जड़ता निम्नलिखित परस्पर संबद्ध कारकों की संयुक्त अंतःक्रिया का परिणाम है—

#### (क) तंत्रिका-जैविक आयाम

- प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स की कार्यक्षमता में आयु-संबंधी परिवर्तन।
- डोपामिन एवं सेरोटोनिन तंत्र में गिरावट
- भावनात्मक मस्तिष्क क्षेत्रों की तुलनात्मक सक्रियता

#### (ख) संज्ञानात्मक आयाम

- पुष्टिकरण पक्षपात
- प्रेरित तर्क
- विश्वास-स्थायित्व एवं आत्म-औचित्य

#### (ग) मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ

- पहचान और आत्म-सम्मान की रक्षा
- अनिश्चितता से बचाव
- आंतरिक संगति बनाए रखने की प्रवृत्ति

#### (घ) सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम

- समूह पहचान और सामाजिक संबद्धता
- विश्वासों में दीर्घकालिक सामाजिक व भावनात्मक निवेश
- सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता

#### (ङ) अस्तित्ववादी आयाम

- मृत्यु-भय
- जीवन के अर्थ की खोज
- पवित्र और अछूते मूल्यों का संरक्षण

इन सभी आयामों की संयुक्त भूमिका मानसिक जड़ता को जन्म देती है और उसे समय के साथ सुदृढ़ करती है।

### 8.2 प्रारंभिक एवं मध्य वयस्कता (25-45 वर्ष) में रणनीतिक मानसिक जड़ता

पूर्ववर्ती अनुभागों में वर्णित जैविक, संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा व्यक्तित्व-आधारित कारक विभिन्न आयु-चरणों में भिन्न-भिन्न रूप से सक्रिय हो सकते हैं। प्रारंभिक एवं मध्य वयस्कता (लगभग 25 से 45 वर्ष) वह चरण है जिसमें व्यक्ति सामाजिक भूमिका, पेशेवर स्थिति और वैचारिक पहचान के माध्यम से अपने जीवन-पथ को अपेक्षाकृत स्थिर कर चुका होता है। इस आयु-काल में मानसिक जड़ता प्रायः संज्ञानात्मक अक्षमता का नहीं, बल्कि हित-संरक्षण और पहचान-रक्षा से जुड़ी रणनीति का रूप ले लेती है। अनेक मामलों में यह देखा जाता है कि व्यक्ति विरोधी विचारों की तार्किकता और सामाजिक प्रासंगिकता को समझते हुए भी उन्हें स्वीकार नहीं करता, क्योंकि ऐसा करना उसकी स्थापित सामाजिक स्थिति, वैचारिक प्रतिबद्धता या भविष्यगत लाभों के प्रतिकूल हो सकता है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि आयु-संबंधी जैविक परिवर्तन और रणनीतिक वैचारिक दृढ़ता परस्पर विरोधी नहीं हैं, बल्कि कई स्थितियों में एक-दूसरे को सुदृढ़ करने वाले कारक के रूप में कार्य करते हैं। यह प्रवृत्ति इस तथ्य को रेखांकित करती है कि मानसिक जड़ता को केवल व्यक्तित्व या आयु से जोड़कर

नहीं समझा जा सकता। कई स्थितियों में यह पहले से मौजूद कारकों की संदर्भ-निर्भर अंतःक्रिया का परिणाम होती है, जहाँ व्यक्ति जानबूझकर वैचारिक दृढ़ता को बनाए रखता है।

### 8.3 व्यावहारिक और सामाजिक निहितार्थ

मानसिक जड़ता को केवल हठधर्मिता या बौद्धिक जड़ता के रूप में देखना न तो वैज्ञानिक रूप से उचित है और न ही सामाजिक रूप से उपयोगी। इसे एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में समझना पीढ़ीगत संवाद, सामाजिक सहिष्णुता और वैचारिक ध्रुवीकरण को कम करने में सहायक हो सकता है। यह दृष्टिकोण यह भी संकेत देता है कि सहानुभूति, संवाद और उपयुक्त मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपों के माध्यम से मानसिक जड़ता की तीव्रता को कम किया जा सकता है।

### 9. निष्कर्ष

यह लेख मानसिक जड़ता और विश्वास-स्थायित्व को एक एकांगी या आयु-सीमित परिघटना के रूप में नहीं, बल्कि एक बहु-आयामी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जैविक परिवर्तन, संज्ञानात्मक पक्षपात, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ तथा व्यक्तित्व एवं विकासात्मक अनुभव मिलकर मानसिक जड़ता की प्रवृत्ति को प्रभावित करते हैं। साथ ही, यह भी स्पष्ट होता है कि मानसिक जड़ता केवल वृद्धावस्था से जुड़ी संज्ञानात्मक सीमाओं का परिणाम नहीं है। प्रारंभिक एवं मध्य वयस्कता (25-45 वर्ष) में भी यह परिघटना विशेष रूप से प्रबल रूप में देखी जा सकती है, जहाँ व्यक्ति अपने धार्मिक, वैचारिक या राजनीतिक विश्वासों से सामाजिक पहचान, पेशेवर स्थिति और भविष्यगत हितों को जोड़ चुका होता है। ऐसी परिस्थितियों में विश्वास में परिवर्तन को व्यक्ति बौद्धिक चुनौती के बजाय संभावित हानि के रूप में अनुभव करता है। इस संदर्भ में मानसिक जड़ता अज्ञान या तर्क-असमर्थता का नहीं, बल्कि कई बार जानबूझकर अपनाई गई मनोवैज्ञानिक रणनीति का रूप ले लेती है। यह रणनीति आत्म-पहचान, सामाजिक पूँजी और स्थापित भूमिकाओं की रक्षा के लिए कार्य करती है। इस प्रकार मानसिक जड़ता को समझने के लिए व्यक्तित्व और आयु के साथ-साथ सामाजिक संदर्भ और हित-आधारित कारकों को भी समान महत्व देना आवश्यक है। अतः मानसिक लचीलापन बढ़ाने के प्रयास केवल वृद्ध व्यक्तियों तक सीमित नहीं होने चाहिए, बल्कि प्रारंभिक एवं मध्य वयस्कता में भी आलोचनात्मक चिंतन, आत्म-चिंतन और वैचारिक खुलेपन को प्रोत्साहित करना सामाजिक संवाद और लोकतांत्रिक विमर्श के लिए अत्यंत आवश्यक है।

### Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

### संदर्भ—

1. Altemeyer, B. (1981). *Right-wing authoritarianism*. University of Manitoba Press.
2. Burke, B. L., Martens, A., & Faucher, E. H. (2010). Two decades of terror management theory: A meta-analysis of mortality salience research. *Personality and Social Psychology Review*, 14(2), 155-195.
3. Greenberg, J., Solomon, S., & Pyszczynski, T. (1997). Terror management theory of self-esteem and cultural worldviews: Empirical assessments and conceptual refinements. *Advances in Experimental Social Psychology*, 29, 61-139.
4. Hedden, T., & Gabrieli, J. D. (2004). Insights into the ageing mind: A view from cognitive neuroscience. *Nature Reviews Neuroscience*, 5(2), 87-96.
5. Kaplan, J. T., Gimbel, S. I., & Harris, S. (2016). Neural correlates of maintaining one's political beliefs in the face of counterevidence. *Scientific Reports*, 6, 39589.
6. Lord, C. G., Ross, L., & Lepper, M. R. (1979). Biased assimilation and attitude polarization: The effects of prior theories on subsequently considered evidence. *Journal of Personality and Social Psychology*, 37, 209-218.

Psychology, 37(11), 2098–2109.

7. Park, D. C., & Reuter-Lorenz, P. (2009). The adaptive brain: Aging and neurocognitive scaffolding. *Annual Review of Psychology*, 60, 173–196.
8. Kunda, Z. (1990). The case for motivated reasoning. *Psychological Bulletin*, 108(3), 480–498.
9. Tetlock, P. E. (2003). Thinking the unthinkable: Sacred values and taboo cognitions. *Trends in Cognitive Sciences*, 7(7), 320–324.
10. Festinger, L. (1957). *A theory of cognitive dissonance*. Stanford University Press.

### Cite this Article

"डॉ. संजय कुमार", "आस्था, उम्र और मानसिक जड़ता: विश्वास-स्थायित्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण", *ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ)*, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:2, October-December 2025.

**Journal URL-** <https://www.researchprojournal.com/>

**DOI-** 10.70650/rpimj.2025v1i2000016